JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

'वेद की कविता' में सरमा–पणि सूक्त संवाद

निर्देशिका – डॉ. सरोज गुप्ता

शोधार्थी – मंजू नामदेव

महाराजा छत्रसाल बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, छतरपुर (म.प्र.)

हिन्दी अध्ययनशाला एवं शोध केन्द्र

सारांश –

ऋग्वेद दशम मण्डल का 108वां सूक्त एक सुन्दर संकेत रूपक है। इसमें सरमा देव गुणी और असुर पणियों का वर्णन है। इस सूक्त का देवता और ऋषि सरमा और पणि हैं। 'वेद की कविता' काव्य संग्रह में सरमा पणि संवाद एक चर्चित ऋग्वेदिक आख्यान है जिसमें सरमा इन्द्र की दूती एक कुतिया है जो पणियों के पास धन की इच्छा से जाती है।

बीज बिन्दु – ऋग्वेद, मानवीय संवेदना, भारतीय जनमानस, वैदिक सूक्त, श्रद्धा।

प्रस्तावना –

''वेदों के प्रति भारतीय जनमानस में आज भी अखण्ड श्रद्धा का भाव अक्षत है। श्री प्रभु दयाल मिश्र की प्रस्तुत कृति 'वेद की कविता' में दिखाई देता है। प्रस्तुत कृति में ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद के कुद महत्वपूर्ण सूक्तों का अनुवाद प्रस्तुत किया गया है।''1

मिश्र जी ने सूक्तों का चयन बुद्धिमत्तापूर्वक किया है। इन्होंने अनेक वैदिक सूक्तियों का सफल हिन्दी अनुवाद पद्यानुवाद कर वेद–ज्ञान को सामान्य जन तक लाने का प्रयास किया है। अनेक उपनिषद्, वृद्धारण्यक ईशावास्य आदि पर इन्होंने काव्य की रचना की है। यह उनकी वेदों के प्रति अन्तर्दृष्टि और विवेचनात्मक बुद्धि का परिणाम है।

श्री मिश्र जी अध्येता, चिंतक, विवेचक, लेखक एवं कवि के रूप में ख्याति अर्जित कर चुके हैं। वेद, संहिता, भगवद्गीता एवं भागवत् पुराण उनके प्रिय ग्रंथ हैं।

मिश्र जी एक अनुष्ठानप्रिय व्यक्ति हैं। धार्मिक कर्मकाण्ड नहीं अपितु वेदाध्ययन और वेदों के संदेश को जन–जन तक पहुंचाना उनके जीवन का पुनीत ध्येय है।

मिश्र जी ने वेद के जिन सूक्तों को चुना है, उनमें 'सरमा–पणि संवाद' बहुत महत्वपूर्ण है। यह उस प्राचीनतम काल की याद दिलाता है, जब वैदिक जन इरावती, रावी और सतलज के पास रहते थे। पास में उत्तर–पश्चिम सीमा प्रांत की पहाड़ियां थी। यह पणियों बनजारों का प्रदेश था। पणि लोग गोधन, भेड़–बकरियां बेचने–खरीदने आते हैं और रात में चुपचाप गायें चुराकर भाग जाते हैं। वे गायों को दूर गुफाओं में छुपा देते हैं। सरमा जासूसी करने वाले कुत्ता–कुतियों में से एक है। आज भी चोरों का पता लगाने के लिए सामेयों (कुत्तों) का उपयोग किया जाता है। इस प्रकार कवि ने 'वेद की कविता' काव्य संग्रह में सरमा–पणि संवाद प्रस्तुत किया है।

वह कौन सी इच्छा है
सरमा
जो तुम्हें लाई है यहां
दुर्गम दीर्घ पथ इतना
अपनी इच्छा से पूरा करता न कोई
कैसे बीती तुम्हारी
काली अंधियारी पिछली रात

इस प्रकार पणि सरमा से प्रश्न करती है और पूछती है कि कौन सी इच्छा लेकर आए हो सरमा, क्या उद्देश्य है तुम्हारा, ये आकाश–गंगा पृथ्वी सुनना चाहती है।

मैं हूँ दूती महेन्द्र की पणियों
पर्वत कन्दराओं में
तुमने छुपाया जो गोधन
बृहस्पति का
उसका पता लगाना है
प्रयोजन मेरा .....

सरमा पणि से कहती है कि मैं राजा इन्द्र की दुती हूँ। तुम लोगों के प्रभूत धन की इच्छा करती हुई घूम रही हूँ। बाढ़ग्रस्त नदी, जल मेरे मार्ग में बाधा को उत्पन्न नहीं कर सका। मेरी इच्छा इतनी तीव्र थी नदी का जल मुझे रोक न सका। इस प्रकार रसा के जल को मैंने पार किया।

कैसा है तुम्हारा राजा इन्द्र
कितना पराक्रम वाला है वह
कैसी है सेना उसके पास
दौत्य कार्य जिसका करने
दूर से तुम आई हो इतनी?

पणि सरमा से पूछती है कि कैसा है तुम्हारा राजा इन्द्र? उसकी दृष्टि कैसी है? तुम इतनी दूर से आई हो। तुम तो मित्रवत हो, स्नेही हो, तुम भी मेरे साथ गोधन की स्वामिनी बन जाओ हमारे साथ। तब वह हमारी गायों का संरक्षक होगा।

सरमा कथन – इन्द्र नहीं है मरणशील
यह मैं जानती हूँ भली तरह
मार सकता है सभी को वह
जिसकी दूती बनी हूँ मैं
बाधा उसकी न कोई
प्रवाहमान जलधारा
निश्चय कर जानो पणि
इन्द्र सुला देगा
तुम सब को रणभूमि में

राजा इन्द्र वो मरणशील नहीं है मैं ये भली प्रकार से जानती हूँ, वह तो सभी पर अत्याचार करने वाला है। मैं उसको कष्ट नहीं पहुंचाया जाने वाला नहीं समझती हूँ, अपितु वह शत्रुओं को कष्ट देता है जिसकी मैं दूती दूर कर यहाँ आई हूँ। बहती हुई गहरे जल वाली नदियाँ उसको छिपा नहीं सकती। हे पणियों, इन्द्र द्वारा मारे जाकर तुम लोग पृथ्वी पर पड़ जाओगे।

आकार के छोरों तक
तुमने जिसे अब तक खोजा सुभगे
गोधन यह
कैसे लौटा देगा कोई युद्ध किए बिना
आयुध हैं हमारे पास भी
तीक्ष्ण और धारदार?

पणियों ने कहा – हे सरमा आकाश की छोर तक चारों तरफ घूमती हुई इन गायों को जिनकी तुमने इच्छा की है। हे सौभाग्यवती तुम से कौन मुक्त कर सकता है? पहले युद्ध करना होगा और हमारे शस्त्र भी अत्यंत तीक्ष्ण हैं।

बातें तुम्हारी पणि
सैनिकों जैसी नहीं

सह न सकेंगे तीर
देह भी तुम्हारे
पापासक्त

सरमा ने कहा – हे पणियों तुम्हारे वचन शस्त्र के आघात से सुरक्षित है तथा पापी शरीर बाणों के निशाने से बचने वाले हो सकते हैं। पर आगे के मार्ग पर नहीं चल सकोगे। आगे का समय तुम्हें दुखदाई भी हो सकता है, किन्तु किसी प्रकार से बृहस्पति दया नहीं करेंगे।

पर्वतों से सुरक्षित कोष
सरमा हमारा यह
अपहरण
अश्व गोधन के
संवर्धित सदा
रक्षित है

पणियों ने कहा – हे सरमा गायों, अश्वों तथा रत्नों से भरा हुआ यह खजाना पर्वतों से ढका हुआ है। कुशल रक्षक पणि, इसकी रक्षा करते हैं। तुम व्यर्थ में इस खाली स्थान पर आई हो।

सोमरस पान से प्रमत्त हुए अंगिरस
ऋषि प्रवर अपास्य यहां आयेंगे
नूतन पथ से हो कर
गोधन समेट लेंगे
सहज में ही वे अपना
स्वयं के कथन का तब
वमन ही करना होगा तुमको .....

सरमा ने कहा– सोमरस पान उत्तेजित, अयास्य, अंगिरस ऋषि प्रवर आदि ऋषि यहां पर आयेंगे। वे किसी नए रास्ते से होकर आयेंगे, गायों के समूहों को बांट लेंगे। तब पणियों को अपने इस वचन को बताना पड़ेगा।

तुम चलकर आई सरमा
भयाक्रांत देवों से
निर्भर तुम हो जाओ
भगिनी हमारी बन
लौटकर अब न जाना कभी
आओ हम बांट लें परस्पर
गोधन जो आया था।

पणियों ने कहा – हे सरमा इस प्रकार यदि तुम देवताओं की शक्ति से पीड़ित की गई हो, तो हम तुम्हें बहन बनाते हैं। फिर मत जाना कभी, हे सौभाग्यवती, हम तुम्हें अलग हिस्सा देंगे, जो आया था गोधन।

कठिन है समझना मुझे
पणियों इस अवसर
कथा यह तुम्हारी गढ़ी स्वजनों की
इन्द्र या अंगिरस कठोर
शायद समझते हों
आच्छादित वे कर देंगे धरती
अतः भगना है श्रेयस्कर तुम्हें
निश्चित मानो पणियों

सरमा ने कहा – मुझे समझना कठिन है पणियों में न तो भ्रातत्व को जानती हूँ न किसी स्वजनों को इन्द्र तथा भयानक अंगिरस इसको जानते हैं। शायद समझते हों। जब मैं आई वे गायों की इच्छा करने वाले मालूम पड़े। हे पणियों तुम्हें भागना ही श्रेयस्कर है, ये तुम

निश्चित मानो। कहीं दूर देश चली जाओ पणियों, चट्टानों के आवरण को तोड़ती हुई सत्य नियम के अनुकूल बाहर निकले, जिनको अंगिरस, सोम, ऋषि ब्राह्मण, बृहस्पति ने ढूँढ निकाला है। ऋषि सोम जो पता लगाया है।

निष्कर्ष – श्री मिश्र जी ने वेद के जिन सूक्तों को चुना है उनमें 'सरमा पणि संवाद' बहुत महत्वपूर्ण है। प्रस्तुत कृति में ऋग् यजुष् और अथर्व वेदों के कुछ महत्वपूर्ण सूक्तों का अनुवाद प्रस्तुत किया गया है। मिश्र जी ने सूक्तों का चयन बुद्धिमत्तापूर्वक किया है।

अनुवाद छन्दोबद्ध है, निश्छन्द और मिश्र शैली में है। साथ ही यह इतनी सरल भाषा में है कि कोई भी इसे सरलता से समझ सकता है।

सरमा–पणि संवाद में सरमा नामक एक शूनी और पणि नामक असुर का संवाद मिलता है। पणि नामक असुरों ने आर्यों की गायों को चुराकर कहीं अंधेरी गुफाओं में डाल दिया। इन्द्र ने अपनी सरमा को उन्हें खोजने के लिए और पणियों को समझाने के लिए दूती बनाकर भेजा है।

संदर्भ सूची :

1. वेद की कविता 'सरमा पणि संवाद', विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी (उ.प.), पृ. 8.
2. वेद की कविता 'सरमा पणि संवाद', विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी (उ.प.), मुख्य पृष्ठ।
3. वेद की कविता 'सरमा पणि संवाद', विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी (उ.प.), पृ. 1.
4. http://www.rdscollgse.anin>
5. साहित्य सागर 'सत् साहित्यिक शोध', मासिक पत्रिका, सम्पादक कमलकान्त सक्सेना।